फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 261 | 1/– | मार्च 2010

मिल–जुल कर कदम उठाने के लिये

मजदूर समाचार तालमेल

★आज के हालात में बड़ी सँख्या में मिल कर कार्य कैसे करें ? वर्तमान में बढते पैमाने पर संगठित प्रयास कैसे करें? सकारात्मक भूमिकाओं के लिये आज संगठनों के स्वरूप कैसे हों? इन प्रश्नों से हम काफी समय से जूझ रहे हैं। यहाँ हम अपने प्रारम्भिक निष्कर्षों को मोटा-मोटी रूप में दे रहे हैं। इस समझ के आधार पर हम फरीदाबाद, ओखला (दिल्ली), गुड़गाँव में अपनी गतिविधियाँ शुरू कर रहे हैं। सुझावों का और उन से भी अधिक साझेदारी का उन सब को निमन्त्रण है जो टेढेपन तथा दिखावे के बोलबाले में सीधे-सहज-सामान्य जीवन के लिये प्रयास करना चाहते हैं।

★तीस वर्ष से हम कारखाना मजदूरों को वर्तमान से मुक्ति के मुख्य वाहकों के तौर पर देख रहे हैं। ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल में फैक्ट्री मजदूरों के बीच कुछ अनुभवों के पश्चात 1982 में हम ने कारखानों के शहर, फरीदाबाद में स्वयं को केन्द्रित किया। इधर कुछ वर्षों से ओखला औद्योगिक क्षेत्र (दिल्ली) और बहुत तेजी से आधुनिक उद्योग के प्रमुख केन्द्र के रूप में उभरे गुड़गाँव के कुछ अनुभव भी हम ने प्राप्त किये हैं। प्रत्यक्ष अनुभवों और उन पर मन्थन के संग-संग हम ने भारत में अलग-अलग क्षेत्रों में कारखानों, खदानों, यातायात आदि में मजदूर हलचलों के अनुभवों को जानने के प्रयास किये हैं। संसार के अन्य क्षेत्रों में मजदूरों के अनुभवों तथा विचारों को जानने के लिये हम ने विशेष प्रयास किये हैं। वर्तमान के संग-संग पिछली पीढियों के अनुभवों व विचारों को जानने-समझने की हम ने कोशिशें की हैं। इन सब अनुभवों व विचारों के आधार पर आज संगठित प्रयासों, संगठन के बारे में हम यह प्रस्ताव पेश कर रहे हैं।

★मिल कर कदम उठाने के लिये पहली जरूरत मिलने-जुलने के अवसरों की है। कारखानों में हम एकत्र होते हैं पर वहाँ सहज बातचीत पर अनेक रोक हैं। रोज 12-16 घण्टे की ड्युटियाँ और फिर आने-जाने में लगता समय, सब्जी-राशन लेना, पानी भरना, तेल-गैस के जुगाड़, भोजन बनाना अथवा बच्चों-पत्नी के लिये समय। ऐसे में अधिकतर मजदूरों के लिये कहीं जा कर मिलने के लिये समय निकालना बहुत-ही मुश्किल है। नियमित तौर पर पड़ोसियों के कमरों में जाना बहुत दिक्कतें पैदा करता है। ऐसे में मजदूर समाचार तालमेल अपना प्रारम्भिक कार्य बस्तियों में मिलने-जुलने के लिये स्थानों का प्रबन्ध करने को बना रहा है। बहुत जल्दी ही फरीदाबाद, गुड़गाँव और ओखला औद्योगिक क्षेत्र में बैठकें स्थापित करने के हम प्रयास करेंगे। सुविधा अनुसार आधा घण्टा-एक घण्टा-दो घण्टे बिना किसी झिझक के बैठक में बिता सकते हैं और बिना किसी रोक के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान कर सकते हैं। जगह-जगह बैठकें स्थापित करने के लिये सुझावों व सहयोग का स्वागत है। बात बढने पर, मिल-जुल कर रहने की इच्छा रखने वाले लोगों के लिये डेरे स्थापित करने में संगठन योगदान देगा।

★संगठन में कोई पद नहीं होंगे। आमतौर पर बैठक के आधार पर सदस्य होंगे और वे सब समिति का गठन करेंगे। बैठकों-समितियों के बीच तालमेल बढाने की कोशिशें होंगी। तालमेलों में सहयोग देने वालों की तकनीकी भूमिका होगी और उनकी कोई अतिरिक्त शक्ति-सत्ता नहीं होगी। समितियों में कोई ऊँची अथवा नीची नहीं होगी। औपचारिक पद तो होंगे ही नहीं, अनुभव-सक्रियता के कारण जो अनौपचारिक महत्व होंगे उन्हें बढाने की बजाय कम करने के प्रयास होंगे। सदस्यों में गैर-बराबरी नहीं, भेदभाव नहीं, दुभान्त नहीं। बैठक के किराये आदि के लिये सदस्य महीने में पाँच रुपये का योगदान देंगे। एक-दूसरे की सहायता के लिये क्षमता अनुसार सदस्य समय तथा ऊर्जा प्रदान करेंगे। स्थाई मजदूर, कैजुअल वरकर, ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूर, कर्मचारी, सब मजदूर संगठन के सदस्य बन सकते हैं। सदस्यों और तालमेल से हमदर्दी रखने वालों द्वारा निजी स्तर पर आर्थिक सहयोग का स्वागत करेंगे परन्तु संस्थाओं से पैसे नहीं लिये जायेंगे।

★मजदूर समाचार तालमेल पंजीकरण नहीं करवायेगा। कम्पनियों-सरकारों से संगठन बहस नहीं करेगा, उन्हें समझाने की कोशिशें नहीं करेगा, अधिकारियों के साथ समझौता वार्तायें नहीं करेगा। आमतौर पर संगठन प्रतिक्रियायें नहीं देगा। हम अपने हिसाब से कदम उठायेंगे और प्रतिक्रियायें देना कम्पनियों-सरकारों के पाले में रहने देंगे। सदस्य अपने सहकर्मियों के साथ मिल कर अपने-अपने कार्यस्थलों पर कदम उठाने के प्रयास लगातार करेंगे। मजदूर समाचार तालमेल क्षेत्र के आधार पर कदम उठाने की कोशिशें करेगा।

★हम आशा करते हैं कि कुछ महीनों में मिल कर कदम उठाने की वो स्थितियाँ बन जायेंगी कि सदस्य व अन्य मजदूर छोटी-छोटी राहत हासिल कर सकेंगे। उदाहरण के लिये : फरीदाबाद, ओखला, गुड़गाँव में नौकरी से निकालने अथवा नौकरी छोड़ने पर 5-10-15 दिन किये काम के पैसे आमतौर पर नहीं दिये जाते। बैठक के आधार पर एक मजदूर के संग दस लोग जा कर तत्काल राहत की कोशिश करेंगे। इस बारे में कुछ विस्तार से बातें बैठक स्थलों पर।

★भारत सरकार के अधीन न्यायालयों की चर्चा करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। कोई जज चाहे तो भी मजदूर-पक्ष में कुछ नहीं कर सकती-सकता क्योंकि एक तो प्रक्रिया ही टेढी-लम्बी है और फिर अपील-दर-अपील। हाँ, कम्पनियों द्वारा मजदूरों पर गैर-कानूनी दबाव डालने के लिये थानों में ले जा कर धमकाने जैसी हरकतों के खिलाफ राहत का संगठन प्रयास करेगा। हम आशा करते हैं कि कुछ माह में ऐसी स्थितियों में थानों में बन्द मजदूरों के पास मजदूर समाचार तालमेल वकील भेज पायेगा।

★सदस्यों द्वारा कार्यस्थलों पर और संगठन द्वारा क्षेत्र आधार पर अपने-अपने हिसाब से मिल कर कदम उठाने के प्रयासों के संग-संग आम मजदूर जो आसानी से कर सकते हैं वो करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित किया जायेगा। उदाहरण के लिये: सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं दिये जाने, ई.एस.आई. और पी.एफ. लागू नहीं करने, जबरन ओवर टाइम और भुगतान दुगुनी की बजाय सिंगल दर से (बाकी पेज चार पर)

24 फरवरी को जारी आदेश अनुसार पहली जनवरी 2010 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार है : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4214रुपये (8 घण्टे के 162 रुपये); अर्ध-कुशल अ 4344 रुपये (8 घण्टे के 167 रुपये); अर्ध-कुशल ब 4474 रुपये (8 घण्टे के 172 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4604 रुपये (8 घण्टे के 177 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4734 रुपये (8 घण्टे के 182 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4864 रुपये (8 घण्टे के 187 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है।* जनवरी और फरवरी महीनों के मँहगाई भत्ते (डी ए) के 601 रुपये हर मजदूर के कानून अनुसार बनते हैं। कम्पनियों से यह बकाया 601 रुपये माँगना बनता है। इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये कुछ पते : 1. श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ 2. श्रम सचिव, हरियाणा सरकार, हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ़

कानून हैं शोषण के लिये छूट है कानून से परे शोषण की

के डी आर फोरजिंग मजदूर : "प्लॉट 14 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। कोई छुट्टी नहीं, महीने के तीसों दिन काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट। हैल्परों की तनखा 3000 रुपये। वेतन देरी से, जनवरी का 16 फरवरी तक नहीं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 50 मजदूरों में 5-6 की ही। शौचालय गन्दा। जाँच वाले 2 फरवरी को आये थे – पूछें तो 4000 से ज्यादा तनखा बताने को कहा था पर फैक्ट्री में कार्यस्थल पर कोई पूछने ही नहीं आया।"

कास्टमास्टर श्रमिक : "प्लॉट 46 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 12 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर महीने के 3000 रुपये। तनखा से पी.एफ. की राशि काटते हैं पर फण्ड के पैसे मजदूरों को मिलते नहीं।"

डी पी इंजिनियरिंग कामगार : "प्लॉट 228 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम। यहाँ 200 मजदूर **टी वी एस, सुन्दरम, सोनालिका, स्वराज, एस्कोर्ट्स, प्रीत ट्रैक्टर** के पार्ट्स बनाते हैं। हैल्परों की तनखा 2700 रुपये लेकिन हस्ताक्षर 3914 पर करवाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 5-7 मजदूरों की ही।"

एसोसियेटेड एप्लाइन्सेज कामगार : "प्लॉट 1 सैक्टर-56 ए स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर **प्लैनेट** नाम से **सी एस डी कैन्टीन** तथा **एच पी** व **भारत गैस** के लिये चूल्हे बनाते हैं। यहाँ **प्रेस्टीज** के लिये भी गैस चूल्हे बनते हैं। चूल्हा असेम्बली में दो ठेकेदारों के जरिये रखे 125 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और इन में महिला मजदूरों की तनखा 2500 रुपये तथा पुरुष मजदूरों की 2700-2800 रुपये। तनखा बहुत देरी से – दिसम्बर की 3 फरवरी को जा कर दी। फैक्ट्री में आने का समय है पर छूटने का पुरुष मजदूरों के लिये कोई समय नहीं है – महिला मजदूरों को रात 7½ बजे छोड़ देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। बफिंग में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर पीस रेट पर और ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती हैल्परों की तनखा 3000 रुपये।"

ब्ल्यू फोरजिंग वरकर : "प्लॉट 12 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हैल्परों की तनखा 3200 और ऑपरेटरों की 3500-4000 रुपये। ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

नूकेम केमिकल डिविजन मजदूर : "54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री के सब मजदूर श्रम विभाग में तारीख पर पहुँचे तब नवम्बर की तनखा 12 फरवरी को मिली। दिसम्बर और जनवरी की तनखायें आज 17 फरवरी तक नहीं दी हैं।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज श्रमिक : "सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 17 डाइंग मशीनें 8-9 मजदूरों से चलवाते हैं। काम का भारी बोझ रहता है। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की हैं और दूसरी शिफ्ट के मजदूरों के नहीं पहुँचने पर जबरन रोकते हैं, लगातार 36 घण्टे काम करवाते हैं। रोकने में सुपरवाइजर भेदभाव बरतते हैं और एतराज पर गाली देते हैं। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम के हो जाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं और वह भी बहुत देरी से – दिसम्बर में करवाये ओवर टाइम के पैसे 12 फरवरी को दिये।"

इण्डो ऑटो टेक कामगार : "प्लॉट 261 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में फैब्रिकेशन में 11½ और 12½ घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक छुट्टी के दिन, रविवार को भी 8 घण्टे तो काम करना ही होता है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ **जे सी बी** के पार्ट्स बनते हैं।"

दलाल ऑटो डाईकास्ट वरकर : "प्लॉट 162 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हैल्परों की तनखा 3500 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अस्सी मजदूरों में 60 की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

शर्तों पर हस्ताक्षर के फन्दे

के बारे में चर्चा स्थान के अभाव के कारण अगले अंक में। इधर प्लॉट 65 सैक्टर-27 ए स्थित **सेन्डेन विकास** और प्लॉट 3 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर, गुड़गाँव स्थित **डेन्सो** फैक्ट्रियों के दुखद घटनाक्रम और उन से सीख लेने पर अप्रैल अंक में विस्तार से चर्चा करेंगे। हर प्रकार के मजदूरों के बीच तालमेल की जरूरत बहुत तीखे रूप में सामने है।

दिल्ली सरकार ने मार्च के आरम्भ में भी मँहगाई भत्ते (डी ए) की घोषणा नहीं की थी। दिल्ली में अभी भी 1 अगस्त 09 वाले सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन हैं।

गुड़गाँव (पेज तीन का शेष)

सुरक्षा कर्मी : " हनुमान मंदिर के पास, डुण्डाहेड़ा में कार्यालय वाली **बी के सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं, कोई छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 4500 रुपये। तनखा 500-1000 रुपये की किस्तों में देते हैं। बकाया तनखा माँगने पर पुलिस से पिटवाने की धमकी। वेतन में से ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड नहीं मिलता।"

सरगम एक्सपोर्ट मजदूर : " 152 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में कार्मिक विभाग वाले बहुत बुरा व्यवहार करते हैं। घण्टे बढा देते हैं, एक-दो छुट्टी चढा देते हैं। नये हैल्परों से तनखा के समय 500 से 1000 रुपये वसूलते हैं – आनाकानी पर गाली देते हैं। कम्पनी की प्लॉट 153 वाली फैक्ट्री में साहब लोग बहुत गाली देते हैं।"

भोरजी सुपरटेक श्रमिक : " 272 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर की तनखा स्थाई मजदूरों को 25 जनवरी को दी थी और ठेकेदार के जरिये रखों को 28-30 जनवरी को। इधर जनवरी का वेतन ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को 18 फरवरी को दिया और स्थाई मजदूरों को 25 फरवरी को। ठेकेदार के जरिये रखे 150 मजदूरों में जिनकी तनखा 3000 रुपये है उनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और जिनकी तनखा 3500 है उनके वेतन से ई.एस. आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं।"

फ्लोलिन्क कामगार : " 141 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में रसायनों के लिये 50 मजदूर लोहे की टंकियाँ बनाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 10 मजदूरों के ही। हैल्परों की तनखा 3000 रुपये। जनवरी का वेतन 23 फरवरी को दिया।"

ईस्टर्न मेडिकिट वरकर : " उद्योग विहार स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को जनवरी की तनखा 17 फरवरी को दी।"

कुरूबॉक्स मजदूर : " 199 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में जनवरी की तनखा आज 27 फरवरी तक नहीं दी है।"

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान	मजदूर लाइब्रेरी आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद–121001
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2010 हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

गुड़गाँव में मजदूर

सुरक्षा कर्मी : " शंकर चौक पर साइबर सिटी फेज-2 में 10 नम्बर बिल्डिंग में कार्यालय वाली **ग्लोब सेक्युरिटी सर्विस** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं, कोई छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 5300 रुपये देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड नहीं मिलता – न तो फार्म भरते, न पी.एफ. नम्बर बताते। ग्लोब सेक्युरिटी के 250 सुरक्षा कर्मी तो **डी एल एफ बिल्डिंग सर्विस** में ड्युटी करते हैं। तनखा हर महीने देरी से – जनवरी की 15 फरवरी को दी।"

ड्राइवर : " 91 उद्योग विहार फेज-1 स्थित **स्विफ्ट कारपोरेशन** में कार्यरत 100 मजदूर जगह-जगह प्रदर्शनियाँ स्थापित करने का काम करते हैं। जब कहीं प्रदर्शनी नहीं लगी हो तब सुबह 9 से साँय 7 की ड्युटी, पर यह कम ही होता है। आमतौर पर प्रदर्शनी का कार्य होता है और 24 घण्टे की ड्युटी जरूरी होती है। तनखा 5500 रुपये तय है, ओवर टाइम के पैसे नहीं देते। ड्राइवरों पर भी तेजी के लिये दबाव रहता है। जयपुर में 24.1.08 को दुर्घटना हुई। बुरी तरह घायल ड्राइवर को कम्पनी गुड़गाँव ले आई और ई.एस.आई. में उपचार करवाया। पूरे 11 महीने बिस्तर पर रहने के बाद 7 महीने बैसाखियों के सहारे। दुर्घटना हुई तब कम्पनी ने ढेरों आश्वासन दिये थे। खर्चे के लिये कम्पनी प्रतिमाह 4000 रुपये देने लगी पर 8 महीने बाद पैसे देने बन्द कर दिये। दुर्घटना के 18 महीने बाद मेडिकल फिटनेस के साथ 18.5.09 को ड्युटी के लिये ड्राइवर कम्पनी पहुँचा। कम्पनी ने दूसरा ड्राइवर रख लिया था। चोटों से उभरे ड्राइवर को गाड़ी चलाने से मना कर दिया और गेट पर 10 घण्टे की ड्युटी थमा दी। खड़े रहने में भारी तकलीफ परन्तु फिर भी ड्राइवर ड्युटी करने लगा। कम्पनी ने ड्राइवरों का रैस्ट रूम बन्द कर दिया। ड्राइवर की कुल तनखा 4900 रुपये और कम्पनी नें इन में से 500 रुपये प्रतिमाह काटने शुरू कर दिये – घायल होने पर जो पैसे दिये थे उनकी वापसी के नाम पर। इधर जनवरी की तनखा में से कम्पनी 1000 रुपये काटने लगी तो ड्राइवर ने एतराज किया – जनवरी की तनखा उसे आज 27 फरवरी तक नहीं मिली है।"

लेबर चौक मजदूर : " उद्योग विहार फेज-1 स्थित लेबर चौक पर हर रोज 500 से ज्यादा लोग एकत्र होते हैं। कभी काम मिलता है, कभी नहीं मिलता। सख्त-भारी काम के लिये दादा किस्म के लोग जबरन भी ले जाते हैं – 200 में तय करके आते हैं पर 8 घण्टे के 150 रुपये देते हैं। पुलिस परेशान करती है – यहाँ मत खड़े हो। पर कोई अन्य जगह है नहीं जहाँ हम खड़े हो सकें। जहाँ खड़े होते हैं वहाँ पीने के पानी तक का प्रबन्ध नहीं है।"

कॉल सेंटर वरकर : " 265 उद्योग विहार फेज-1 स्थित कॉल सेन्टर में हम 100 कर्मचारी होमकीपिंग विभाग में हैं। हमें 9 घण्टे प्रतिदिन कार्य पर 30 दिन के 3640 रुपये देते हैं।"

भारत एक्सपोर्ट श्रमिक : " 376 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 रुपये और कारीगरों को 8 घण्टे के 110-140 रुपये। हर रोज सुबह 9 से रात 1 बजे तक काम। साप्ताहिक अवकाश के दिन, रविवार को ओवर टाइम कार्य। ड्राइवरों से भी कम्पनी सुबह 7-8 से रात 10-11 तक रोज ड्युटी लेती है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। कम्पनी की 493 फेज-3 तथा 316 फेज-4 में भी फैक्ट्रियाँ हैं।"

ई ई एल इण्डिया कामगार : " 509-510 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में सीमेन्ट के रोटर पैकर बनाने के कार्य में हैल्पर कैजुअल वरकर हैं और कहने को 3914 रुपये तनखा देते हैं पर इन में से महीने में पड़ते 4 अथवा 5 रविवार के पैसे काट लेते हैं। महीने में 70-80 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

हीटैक्स मजदूर : " 69 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में प्रतिदिन सुबह 8½ से रात 9 की ड्युटी है और रात 3 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 180 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। बॉयलर टैंक बनाती फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500 रुपये।"

कंचन इन्टरनेशनल श्रमिक : " 872 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में जनवरी की तनखा आज 27 फरवरी तक नहीं दी है। सितम्बर-अक्टूबर तक की तनखायें बकाया हैं, 500-1000 रुपये खर्चा दे देते हैं।"

प्रिमियम मोल्डिंग कामगार : " 194 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **मारुति सुजुकी, महिन्द्रा, हुँडई, टाटा, फोर्ड** वाहनों के स्टीयरिंग व्हील बनाते हैं। पचास कैजुअल वरकरों और ठेकेदार के जरिये रखे 100 मजदूरों से मशीनें भी चलवाते हैं पर सब को हैल्पर कहते हैं और तनखा 3000-3500 रुपये। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम जिसका भुगतान मात्र 6 रुपये प्रति घण्टा अनुसार।"

कलमकारी वरकर : " 280 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में काम करते 400 मजदूरों में 10-20 पुराने ही स्थाई हैं। कैजुअल वरकर फैक्ट्री में लगातार काम करते रहते हैं पर हर 6 महीने में कम्पनी कार्ड बदल देती है – कभी **एम टी**, कभी **एस टी**, कभी **मात्रा** के नाम से। साप्ताहिक छुट्टी दिखाते हैं पर रविवार को ड्युटी रहती है। महीने में 120 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान डेढ की दर से। पी.एफ. में गड़बड़ी – शिकायत पर भविष्य निधि कार्यालय वाले बोलते हैं कि ज़मा नहीं करते, हम क्या करें। फैक्ट्री में **आर डी, ऋद्धिका, मदरहुड** का माल बनता है।"

रॉयल फैक्स मजदूर : " 256 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में गत्ते बनाते मजदूरों की ड्युटी रोज सुबह 8½ से रात 10½ तक – रविवार को रात 9 बजे छोड़ देते हैं। हैल्परों की तनखा 2400 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

(बाकी पेज दो पर)

तालमेल.. (पेज चार का शेष)

है। एक सौ की बागडोर पाँच को सौंपने वाली प्रतिनिधि-प्रणाली आज नाकारा है, नेताओं के निर्देशन में संघर्ष करना घातक है। पाँच की बजाय पिचानवे प्रतिशत की सक्रियता और क्षेत्र के आधार पर कदम जरूरी लगते हैं।

– आज एक चीज का उत्पादन हजारों वर्ग किलोमीटर में स्थित हजारों फैक्ट्रियों के जरिये होता है। समुद्र पार से, हजारों मील दूर पार्ट्स का आना-जाना भी उल्लेखनीय है। और, उत्पादन का वितरण विश्व-व्यापी स्वरूप ग्रहण कर चुका है। दुनिया के मजदूरों के बीच तालमेल आज पहले से भी ज्यादा अनिवार्य आवश्यकता हैं।

– व्यक्ति-विशेष, संस्थान-विशेष को दोष देने से कुछ नहीं होगा। हमारा वास्ता एक सामाजिक सम्बन्ध से है, सामाजिक प्रक्रिया से है। किसी को भी "अन्य" नहीं बनाना, प्रत्येक को सह-पीड़ित के तौर पर लेना राहें खोलने में उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है। सामाजिक प्रक्रिया ने दमन-शोषण के लिये विशाल तन्त्र को खड़ा किया है। टकराव, आर-पार के तरीके बिछा रखे जालों में फँसना है। क्षेत्र में आम हड़ताल की बजाय तीन दिन लगातार छुट्टियाँ करने जैसी बातों पर विचार करना बनता है। आज के हालात में, आज के हालात को बदलने के लिये क्या-क्या कर सकते हैं इस बारे में व्यापक चर्चायें आवश्यक हैं।

– आज हमारे दुःख का मुख्य कारण मजदूरी-प्रथा है। अधम है नौकरी-चाकरी। अन्तहीन पीड़ा लिये है ताबेदारी। फिर भी, दुःख से पार पाने के अधिकतर प्रयास इस मजदूरी-प्रथा को बनाये रखने के दलदल में फँस जाते हैं। मजदूरी-प्रथा पर टिकी वर्तमान व्यवस्था आज इतनी खोखली हो गई है कि वह मजदूर बनने को रोकने के लिये हाथ-पैर मार रही है। दूसरी तरफ लोगों की बड़ी तादाद मजदूर बनने में राहत देख रही है। नौकरी-चाकरी को मजबूरी की बजाय चाहत लेना बड़े पैमाने पर चलन में है। बेरोजगारी बहुत भारी समस्या बन चुकी है। लक्षण निकट भविष्य में बेरोजगारी के बहुत ज्यादा बढने के हैं। मजदूर, किसान, दस्तकार, छोटे दुकानदार और बेरोजगार तो बहुत ज्यादा दुखी हैं ही, गरीबों को नियन्त्रण में रखने वाले प्रबन्धक वर्ग की पीड़ा भी कोई खास कम नहीं है। साहब होना वास्तव में सजी-धजी चलती-फिरती लाश होना है। इसलिये संगठनों-संगठित प्रयासों द्वारा मजदूरी-प्रथा को निशाने पर लेना बनता है, नये समुदायों के लिये प्रयास करना बनता है। मजदूरी करने को कुछ हद तक सहनीय बनाने के प्रयास वर्तमान व्यवस्था को टिकाये रखने के औजार बनते हैं। और, सत्ता के लिये संघर्ष मजदूरी-प्रथा के बेहतर संचालन के दावों के अलावा कुछ नहीं हैं।

इस प्रस्ताव को व्यवहारिक रूप देना साझेदारी के लिये इच्छुक लोगों की सँख्या और क्रियाशीलता पर निर्भर करेगा। बैठकों की स्थापना की जानकारी हम देते रहेंगे। तब तक मिलने के लिये मजदूर लाइब्रेरी आयें।

मजदूर समाचार तालमेल..... (पेज एक का शेष)

करने, गाली-मारपीट, तनखा में देरी आदि के बारे में सम्बन्धित विभाग व अधिकारी को शिकायतें करने में सहायता। बैठक में पते, पत्र लिखने के बारे में सुझाव आदि आसानी से उपलब्ध रखना।

✱ मजदूर समाचार तालमेल बस्तियों में बैठकों पर आधारित होगा और भारत में अन्य स्थानों पर, संसार में अन्य क्षेत्रों में मजदूरों द्वारा मिल कर उठाये जाते कदमों के साथ तालमेलों के लिये खुला रहेगा। संगठन पूरे विश्व में मजदूरों की पहलकदमियों के संग खासकरके और जनता की पहलकदमियों के संग आमतौर पर तालमेलों के लिये विशेष प्रयास करेगा। ऐसे तालमेलों में योगदान देने के इच्छुक लोगों को किसी बैठक से जुड़े नहीं होने पर भी सदस्यता दी जायेगी।

सदस्य बनने के बारे में विचार कीजिये। बस्ती में बैठक के लिये स्थान चुनने में सहायता कीजिये। सहज वातावरण में अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान कीजिये। राहें निकलेंगी - आगे जायेंगी।

✱ दो सौ वर्ष हो गये हैं विश्व में मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन को उल्लेखनीय बने। इन दो सौ वर्षों में काफी-कुछ बदला है :

– छोटे-से इंग्लैण्ड में उत्पादन में स्थापित हुई फैक्ट्री-पद्धति यूरोप और उत्तरी अमरीका की राह आज पूरी दुनिया में फैल गई है। पृथ्वी के कोने-कोने में कारखानों के जाल बिछ गये हैं। उत्पादन में छा जाने के संग-संग फैक्ट्री-पद्धति व्यापार-यातायात-शिक्षा-चिकित्सा-मनोरंजन में पसर चुकी है। विश्वविद्यालय-अनुसंधान संस्थान ज्ञान उत्पादन की फैक्ट्रियाँ बन गये हैं।

– आरम्भ में हर कारखाने का कोई मालिक होता था। फैक्ट्री स्थापित व संचालित करने की लागत बढते जाने पर किसी एक द्वारा कारखाना लगाना अधिकाधिक मुश्किल होता गया। आठ-दस लोग मिल कर कारखाना लगाने लगे, वे इकन्नी-दुअन्नी के हिस्सेदार बने, ज्वाइंट स्टॉक कम्पनी उभरी। बढते आकार और लागत ने शीघ्र ही दस-बारह लोगों द्वारा मिल कर कारखाना लगाना सम्भव नहीं रहने दिया। फैक्ट्री लगाने के लिये हजारों शेयर होल्डरों वाली कम्पनियाँ उभरी। परन्तु जल्दी ही हजारों शेयर होल्डरों के जरिये धन जुटा कर भी उत्पादन इकाई लगाना सम्भव नहीं रहा क्योंकि कारखानों का आकार, जमीन, इमारत, मशीनें, कच्चा माल, ईंधन, माल का भण्डारण, दूर-दराज से खरीद-बिक्री, हजारों मजदूरों की तनखा आदि ने लागत बहुत ज्यादा बढा दी थी। कम्पनियाँ स्थापित-संचालित करने के लिये कर्ज कम्पनियों के लिये धन (पैसों) का मुख्य स्रोत बना। उत्पादन क्षेत्र में सरकारों के उतरने का यह एक बड़ा कारण बना।

– आज उत्पादन इकाईयों के संग-संग व्यापार, यातायात आदि में उल्लेखनीय कम्पनियाँ 80-85 प्रतिशत कर्ज और 15-20 प्रतिशत शेयरों से प्राप्त धन से स्थापित-संचालित हैं। जो चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर हैं उनके पास निजी तौर पर शेयर भी मात्र पाँच-सात प्रतिशत होते हैं। यानी, कम्पनी में लगे पैसों के एक प्रतिशत के भी दसवें-सौवें हिस्से वाले चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर होते हैं पर इनका व्यवहार मालिक जैसा होता है। मालिक जो "अपनी" कम्पनी में चोरी करने में लगे रहते हैं। कम्पनियों का कोई मालिक नहीं होता की हकीकत मजदूरों के सामने तब आती है जब कम्पनी डगमगा जाती है, दिवालिया हो जाती है और मजदूरों को अपनी लेनदारियों के लिये गिरवी रखी सम्पत्तियों से कुछ मिलने के लिये न्यायालय के आदेश का इन्तजार करने को कहा जाता है।

– उत्पादन के बढते पैमाने ने दसियों हजार मजदूरों वाले कारखानों पर भी विराम से इनकार किया। भाप-कोयले आधारित मशीनों का स्थान लेती तेल, बिजली से चलती मशीनों ने काम की रफ्तार बढाई, उत्पादन बढाया और मजदूरों की सँख्या घटाई। ऑटोमेशन और विशेषकर इलेक्ट्रोनिक्स के प्रयोग ने इस प्रक्रिया में तीव्र वृद्धि की। फिर भी, आज का उत्पादन स्तर एक-एक कारखाने में लाखों मजदूरों की आवश्यकता प्रस्तुत करता है। चीन में एक लाख मजदूरों वाली इलेक्ट्रोनिक्स उपकरण बनाने वाली फैक्ट्री इस समय कार्यरत है। लेकिन उत्पादन क्षेत्र में नित नये परिवर्तन होते हैं, इधर अधिक तीव्रता से हो रहे हैं। एक स्थल पर बड़ी सँख्या में मजदूरों को काबू में रखना एक तो यूँ भी बहुत कठिन होता है और ऊपर से पूरी उत्पादन प्रक्रिया में अचानक भारी उलट-फेर की आवश्यकता का बार-बार उभरना। ऐसे में मजदूरों से निपटना अधिकाधिक विस्फोटक हो जाता है।

– बड़ी सँख्या में मजदूरों वाले विशाल कारखानों को कई फैक्ट्रियों में बाँटने की प्रक्रिया पूरे संसार में चली है। भारत में कपड़ा उद्योग को देखें। इन 25-30 वर्षों में कपड़े के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है पर कताई-बुनाई-प्रोसेसिंग-रंगाई-छपाई वाली बड़ी-बड़ी कम्पोजिट कपड़ा मिलें गायब हो गई हैं। मुम्बई, इन्दौर, ग्वालियर, कानपुर, दिल्ली, फरीदाबाद की नामी कपड़ा मिलों का आज नामोनिशान नहीं मिलता। एक स्थान पर 10-20-50 पावरलूमों की सँख्या मुम्बई, सूरत आदि में दसियों लाख है। वर्तमान के विशेष पहलू को कुछ और उभारने के लिये वाहन उद्योग को लें। आज कार उत्पादन के लिये साढे सात हजार वर्ग किलोमीटर में फैले बहुत विशाल कारखाने की आवश्यकता है जिसमें कई लाख मजदूर काम करते हों। लागत का जुगाड़ और खासकरके मजदूरों पर नियन्त्रण असम्भव..... ढलाई, मशीनिंग, असेम्बली अलग-अलग स्थानों पर की राह ऑटो हब का निर्माण। एक कारखाने को हजारों कारखानों में बाँटना। आज मारुति सुजुकी कारें गुड़गाँव में दो फैक्ट्रियों में असेम्बल की जाती हैं पर इनके पुर्जे गुड़गाँव, फरीदाबाद, ओखला, नोएडा स्थित हजारों फैक्ट्रियों में बनते हैं। एक-दो पुर्जे बनाती कई फैक्ट्री-वर्कशॉप हैं। मुख्य कम्पनी के लिये कार्य करते हजारों फैक्ट्रियों के संचालक, विशेषकर छोटी फैक्ट्रियों के डायरेक्टर उत्पादन में निजी हस्तक्षेप के जरिये "मालिक" के भ्रम को बनाये रखने में योगदान देते हैं। लेकिन हजारों स्थानों पर पुर्जे बनवाना भी विश्व की विशालतम वाहन निर्माता जनरल मोटर कम्पनी को दिवालियेपन से नहीं बचा सका है। मण्डी के समुद्र में कागज की नाव हैं कम्पनियाँ।

– एक तरफ नित नई मशीनरी, ऑटोमेशन, इलेक्ट्रोनिक्स द्वारा उत्पादन में भारी वृद्धि और कार्यरत मजदूरों की सँख्या में बड़ी कटौती। दूसरी तरफ करोड़ों में तबाह हो रहे दस्तकारों और किसानों का मजदूरों की कतारों में धकेले जाना। भाप-कोयले के जमाने में छोटे-से इंग्लैण्ड और फिर यूरोप में किसानों-दस्ताकारों की इतने बड़े पैमाने पर तबाही हुई कि उन में से कुछ ही फैक्ट्रियों में मजदूर बन सके, कुछ दुकानदार बने और बड़ी सँख्या में लोग दूर-दराज अमरीका-आस्ट्रेलिया को खदेड़े गये। इन सौ वर्षों में, खासकरके पचास वर्षों में भारत, बांग्लादेश, चीन, वियतनाम, कोरिया, इण्डोनेशिया में मजदूरों की सँख्या में तीव्र वृद्धि हुई है। लेकिन यूरोप से विस्थापन ने पहले ही अमरीका-आस्ट्रेलिया को "भर दिया"। आज एशिया, अफ्रीका, दक्षिणी अमरीका में तबाह हो रहे करोड़ों दस्तकारों-किसानों के जाने के लिये कहीं कोई "खाली जगह" नहीं हैं। लाखों द्वारा आत्महत्यायें, लाखों का मरने-मारने में उतरना, हजारों का आत्मघाती बम बनना। भारत की ही बात करें तो यहाँ एक नौकरी के लिये एक सौ लोग खड़े हैं।

– मालिक की फैक्ट्री की जगह कम्पनी की फैक्ट्री बनने ने एक फैक्ट्री में काम बन्द कर दबाव बनाने को आमतौर पर मजदूरों का कारगर औजार नहीं रहने दिया। जगह-जगह 1980-1990 के दौरान इस कड़वी सच्चाई के दर्शन हुये। अनुभवों के आधार पर जहाँ मजदूर उकसावों के बावजूद हड़ताल करने से बचते रहे वहाँ कम्पनियों ने बड़े हमलों के लिये तालाबन्दियाँ की। और फिर, 1990-2000 के दौरान बड़े पैमाने पर स्थाई मजदूरों की छँटनियों ने इस हकीकत से मुँह फेरना सम्भव नहीं रहने दिया। इस प्रक्रिया ने फैक्ट्री-आधारित यूनियन को खोखला कर दिया। इसलिये बात सही और गलत प्रतिनिधियों की नहीं है। मामला नकली अथवा असली नुमाइन्दों का नहीं है। बात कम अथवा अधिक जुझारू संघर्षों की नहीं है। मामला "कुछ और डटे रहते तो" का नहीं है। जब फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य में अधिकतर मजदूर स्थाई थे तब भी वास्तव में एक फैक्ट्री तक सीमित संघर्षों का महत्व बहुत सिकुड़ गया था। इधर उत्पादन कार्य में 80-85 प्रतिशत मजदूरों के अस्थाई होने ने तो 1990-2000 के दौरान के संघर्षों को प्राचीन बना दिया

(बाकी पेज तीन पर)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011